विजेता नागराज

एक आकर्षक स्टीकर
मुफ्त

विजेता नागराज
संजय गुप्ता
मनीष गुप्ता
प्रताप मुळीक
मिलिंद मिसाळ और
विठ्ठल कोंबळे
इच्छाधारी नागों के नागमणि द्वीप में स्थित यह असाधारण गुफा —
जानने वाले जानते हैं कि इस गुफा में वास करते हैं सैकड़ों, हजारों दिव्यशक्तियों के स्वामी, महा-शक्तिमान, नागश्रेष्ठ कालदूत …
…महात्मा कालदूत
उनके सामने खड़ा वह शख्स "ज़हर" उगल रहा था अपने मुख से —
इस द्वीप से निकले हुए कई सौ वर्ष गुजर गये हैं हमें, अब आपको मुझे और मेरे साथियों को इस द्वीप पर वापस लौटने की आज्ञा देनी ही होगी!
हमने कहा ना कि हम ऐसा करने में असमर्थ हैं। द्वीप के नियमानुसार ऐसी आज्ञा सिर्फ इस द्वीप का राजा नागराज ही दे सकता है।

लेकिन तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के दुराचारी और क्रोष्ट कृत्य को देखकर नागराज तुम्हें ऐसी आज्ञा हरगीज नहीं देगा इसलिए···
···इसलिए वापस लौट जाओ अपनी दुनिया में।
वितृष्णा से भर गया उसका स्वर--
नागराज! नागराज! नागराज! देवता बना लिया है आपने उसे, लेकिन वह मनुष्य है··· उन मनुष्यों में से एक जो अपने स्वार्थ और लालच के लिए अपने प्रियजनों का भी गला काट देने में नहीं हिचकिचाते···
भी एक दिन
ब्रह्माण्ड के
एक बहुत बड़ा
संकट बन
जायेगा।
इससे ज्यादा और कुछ ना सुन सके महात्मा कालदूत--
बस!··· बस करो, नागराज के विरुद्ध बहुत जहर उगल चुके हो तुम। अब चले जाओ यहां से···
···चले जाओ।
पूंछ पटकता वहां से रवाना हो गया वह—
नागराज मनुष्य अवश्य है, लेकिन हमें पूर्ण विश्वास है कि स्वार्थ और लालच उसे छू भी नहीं पायेगा।

ई का सहार इन्टरनेशनल एयरपोर्ट—
सनी ही सनसनी फैली हुई थी
के कण्ट्रोल रूम में—
अभी कुछ देर पहले जो
इंग 737 दुबई के लिये उड़ा
उसे हाईजैकर नामक एक
व्यक्ति ने हाईजैक करके जंगल
में बने एक टेम्परेरी रनवे पर
उतार लिया है।

...सीने की सैकड़ों बूंदें चुहचुहा आईं अधिकारी के माथे पर—

पुलिस हैडक्वार्टर को स्थिति की सूचना दो। मैं गृहमंत्रालय से इस विषय में बात करता हूं।

ओ.के. सर!

कुछ देर में ही चर्चा आम हो

ओह, ये तो बहुत बुरा हुआ।

इधर जंगल में बने वायुसेना की उड़ानों के लिये इस्तेमाल होने वाले इस टैम्परेरी रनवे को पुलिस ने चारों तरफ से घेर लिया था—

लेकिन अभी तक
ने प्लेन के पास भी फट
की कोशिश नहीं की थी

हाईजैकर की धमकी की नंगी तलवार जो लटकी हुई थी सभी के सिर पर—

अपनी सफलता पर
नहीं समा रहा था हा
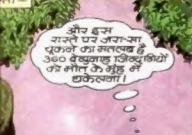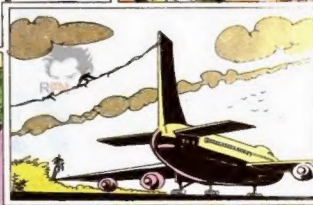
...और पाँच करोड़
...ा वह आतंकवादी
...तला जिसने अपने पाँच
...थियों को छुड़वाने का
...मुझे ठेका दिया है।
TOILET →
...ा पूरे होने वाले थे
...ईजेकर के सपने?
नहीं...
...क्योंकि ... पहुंचा था वहाँ...
नागराज...
...जिसने अपने नाग सैनिकों की मदद से...
...ा सिखा था प्लेन तक पहुंचने का वह ...ता —
और इस रास्ते पर ज़रा-सा चूकने का मतलब है 360 बेगुनाह ज़िन्दगियों को मौत के मुंह में धकेलना।
...ैसा भला चूक कहां होती थी नागराज से —
प्लेन तक आ पहुंचा हूं मैं अब हाईजेकर को सम्भलने का मौका दिये बगैर अन्दर पहुंचकर उसे दबोचना है।
AN ... SCAN

अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग कर नागराज ने तेज़ी से खोला प्लेन का दरवाज़ा—
और—
कुछ समझ नहीं पाया हाईजैकर कि...
...लहरा उठा हवा में—
इसी के साथ प्लेन के पायलेट ने किया बेहद सूझ-बूझ से भरा वह काम—
अब सुरक्षित था प्लेन और उसके यात्री—
हाईजैकर; भरभराकर ढह गया था जिसके सपनों का महल—
नागराज! आज तुम्हारी कहानी को बीते हुए कल का किस्सा बनाकर छोड़ूंगा मैं।
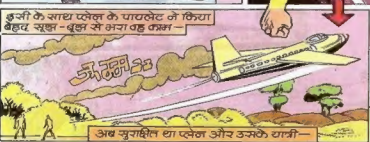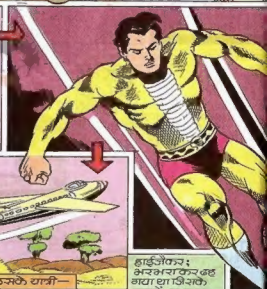
ी चौंका नागराज—
अरे! ये प्लास्टिक का खोल-सा कैसा निकल रहा है उसके हाथ से!
घातक ढंग से मिला नागराज को उसके सवाल का जवाब—
विज्ञान का अनोखा नमूना है ये बुलेट प्रूफ खोल इसके बाहर निकलने के साथ ही इसमें जन्म लेता है यह बम...
... जिसकी विशेषता और भयानकता तुम्हें तब पता चलेगी नागराज, जब ये बम तुम्हारे चिथड़े उड़ा देंगे।
ओफ्फ!
भीषण धमाके से थर्रा उठा आस-पास का वातावरण—
जहीं जानता था उन धमाकों ने
उफ! सचमुच बहुत घातक है बम और उसे फेंकने वाला प्लास्टिक का खोल।
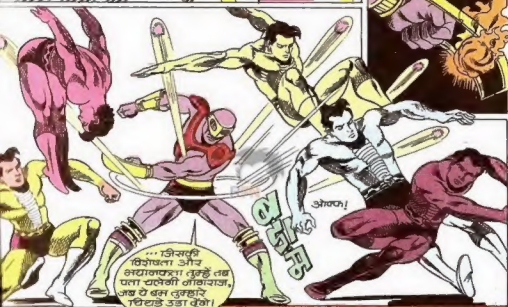
...लेकिन इनसे बचकर मुझे उस तक पहुँचना ही होगा!
नागराज की मंशा को तुरन्त ही भांप गया था हाइजैकर —
प्लाज्मा बमो की बाढ़ के आगे तुम्हारे इरादे अ तुम्हारा शरीर अ ही दम तोड़ दें नागराज
इस बार अपने बमों के साथ आया हाईजैकर भी —
धड़ाम
आऽऽ
इस अप्रत्याशित वार ने दूर उछाल दिया नागराज
और तब --
अपने बनाने वालों को याद कर लो नागराज! क्योंकि यह क्षण तुम्हारी जिंदगी के आखिरी क्षण हैं!
इस बार हाईजैकर द्वारा फेंके गये प्ला बमों ने शर्तिया नागराज के परखच्चे देने थे अगर-

विलक्षण जाति का इच्छाधारी नाग!
इधर अपने हाथ में लपके फ्लाज्मा बमों को वापस उछाल दिया उसने—
उफ! ये अद्भुत इन्सान कहाँ से बीच में आ गया?
क अद्भुत रूप धर कर हाईजैकर से टकराया
ह अनोखा शख्स—
भड़ाक
ध से भुनभुना उठा हाईजैकर—
बीच में
दकर अपनी
ति भूला ली
तुमने!
इस बार हाईजैकर के हाथों से गोले निकलने से पहले ही उस तक पहुंचा नागराज—
धड़ाक

अब कहां सम्भलने का मौका देने वाला था नागराज उसे--

तुरन्त ही वहां पहुंचे पुलिसकर्मियों ने हाइजेकर को लाद दिया लोहे के जेवरों से

थैंक्यू नागराज! तुमने सही समय पर पहुंच कर सारी स्थिति को सम्भाल लिया।

मैन्शन नो इंस्पेक्टर

आइये वापस शहर चलें।

थैंक्यू इंस्पेक्टर, आप पहुंचिये, मुझे किसी बहुत जरूरी काम से यहीं रुकना है।

क्यों कि मुझे जानना है अभी एक ऐसा रहस्य जो मेरे मस्तिष्क में खलबली मचाए हुए है।

तुरन्त ही हाईजैकर को लेकर रवाना हो गई पुलिस पार्टी--

... और नागराज --

कहां गया वह इच्छाधारी नाग! अभी कुछ देर पहले तो यहीं था।... वह आस-पास ही जमीन में कहीं घुसा है... उसे तलाश करना होगा।

जल्दी ही सफल हुआ नागराज--

हाईजैकर के बम के धमाके से बने गड्ढे में रेंग कर गया है वह इच्छाधारी नाग...
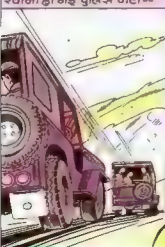
...मैं भी चलता हूं इसमें।
और कुछ पलों बाद ही जा पहुंचा उस छोटी, किंतु अनोखी व अद्भुत दुनिया में –
ओह!
विलक्षण जाति के उन इच्छाधारी नागों की छोटी-सी दुनिया, जिन्हें सदा नशीले पदार्थों का सेवन करने के अपराध में विसर्पी के पिता मणिराज ने नागमणि द्वीप से हमेशा के लिए निष्कासित दिया था।

तो इसी विलक्षण जाति का है मेरा मददगार, लेकिन वह है कहां?
अपने में ही मस्त नशे में धुत पड़े विलक्षण जाति के इच्छाधारी नागों के बीच नागराज अपने मददगार को ढूंढने में लग गया—
उफ! इच्छाधारी जैसी अद्भुत शक्ति के स्वामी होने के बावजूद भी ये नाग नशीले पदार्थों के चक्कर में अपने आपको तबाह करने पर तुले हुये हैं।
अच्छा हुआ विसर्पी के पिता ने इन्हें नागमणि द्वीप से निकाल दिया, वरना ये द्वीप के सभी नागों को अपने जैसा बना देते।
नशीले पदार्थों के खेत। जो यहां के इच्छाधारी नागों का प्रमुख भोजन है।
आखिर नागराज ने ढूंढ ही लिया अपना मददगार—
तुम यहां कैसे आ पहुंचे?
तुम्हारा पीछ
करते हुए, मैं तुम
बारे में जानने अ
तुम्हें अपनी ज
बचाने का
धन्यवाद दे
आया था

बोला वह—

तुम्हारी जान बचाने के लिए मैंने ... नहीं पकड़ा था। वो तो मैंने ... था कि उसके ... छोटी-सी शक्ल ... दुनिया में हंगामा मचा दिया था। मैं उसे उसका दण्ड देना चाहता था।

खैर, तुम्हारा उद्देश्य जो भी रहा हो, उससे मेरी जान जरूर बची, इसलिये धन्यवाद देना मेरा फर्ज था।

ठीक है!... ठीक है। अब तुम वापस लौट जाओ!

लेकिन मेरी बात तो सुनो...
बस! अब कुछ सुनना नहीं चाहता मैं। चले जाओ यहां से। फिर कभी इधर आने की कोशिश की तो विलक्षण के कहर से नहीं बच पाओगे तुम!
भभक उठा नागराज भी--
ठीक है विलक्षण! फिलहाल तो मैं जा रहा हूं यहां से, लेकिन याद रखना तुम्हें और तुम्हारे साथियों को अपनी नाग सेना में शामिल करके ही रहूंगा। और जब तक ऐसा नहीं हो जाता चैन से नहीं बैठूंगा मैं।
फिर एक पल भी वहां नहीं रुका नागराज--
मैं इन्हें इस तरह तबाह नहीं होने दूंगा, महात्मा गोरखनाथ की सलाह लेनी होगी मुझे।
नागराज के बुलावे पर जब उसके सामने प्रकट हुए महात्मा गोरखनाथ तो सारी स्थिति से अवगत कराया नागराज ने उन्हें--
तुम सही दिशा में सोच रहे हो नागराज, इसी में विलक्षण जाति और मानवता की भलाई है...
...लेकिन उन्हें अपनी नाग सेना में शामिल करने के लिए तुम्हें नायक से खलनायक बनना होगा।

विलक्षण जाति के इच्छाधारी नागों की उस छोटी-सी अद्भुत दुनिया में हड़कम्प मच गया तब, जब—

आग! आग!
हमारे खाद्य पदार्थों के खेतों में आग लग गई।

सुनो, मैं समझाता हूं तुम्हें।

भागा खड़ा हुआ प्रत्येक नाग—

आओ आग बुझायें।

आओ!

लेकिन आग बुझ सकने की स्थिति से कई कदम आगे बढ़ चुकी थी--

उफ! हमारे खाद्य पदार्थों के खेत जलकर स्वाहा हो गये।

लेकिन ये आग लगी कैसे?... किसने लगाई ये आग?

मैंने

समझाते चले

हां, लेकिन ये सब तुम्हारे लिये किया है मैंने... तुम्हारे लिये बना हूं मैं खलनायक!
फुंफकार उठा विलक्षण--
अगर ऐसा है तो अब तुम यहां से बच-कर नहीं जाओगे नागराज!
विलक्षण के साथ कई सर्पमानव क्रोध से भभकते आगे
लेकिन--
पीछे हटो!
सटाक
विलक्षण और उसके साथियों पर टूट पड़ा नागराज--
साधारण मनुष्यों के सामने कारगर होगी तुम्हारी शक्ति, लेकिन मैं नागराज हूं...
...ना गराज!

...के सामने भला कब तक खड़े ... सहमते से सर्पमानव--
जब तक तुम मेरी शर्त नहीं मान जाते, तब तक तुम्हारे लिये मेरा यह खलनायकी वाला रूप मौजूद रहेगा...
...फिर आऊंगा मैं तुम पर अपना कहर बरसाने।
नागराज के चले जाने के बाद सहमते अब विलक्षण सर्पमानव--
हमें नागराज की बात मान लेनी चाहिए, वरना उसका कहर हम पर ऐसे ही बरसता रहेगा।
नहीं!...
...नागराज! अब हम ... नहीं कर सकता। उसके कहर से बचने का एक उपाय है मेरे पास।
...नजर आ रही थी ... आंखों में--

दिल्ली का प्रगति मैदान--
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों के लिए विश्व प्रसिद्ध--
INTERNATIONAL DIAMOND TRADE FAIR
इसी प्रगति मैदान में आज लगा हुआ था इन्टरनेशनल डायमण्ड ट्रेड फेयर--
विश्व के एक से एक बढ़कर बेशकीमती हीरे नुमाइश के लिए रखे हुए थे यहां--
INTERNATIONAL DIAMOND TRADE FAIR
पंडाल नम्बर 7, जिसमें मौजूद प्रत्येक शख्स की आंखें चमक के आगे फीकी नजर आ रही थी वहां रखे हीरों की चमक
और ऐसा इसलिए हुआ था, क्योंकि उन आंखों के सामने मौजूद था--
नागराज! हमारा असली सुपर हीरो!
नागराज!

किसी ने सपनों में भी नहीं सोचा था
यहाँ रखे एक-एक हीरे को अपने साथ ले जाने आया हूँ मैं...
...और तुम में से कोई मेरे काम में अड़ंगा न डाले, इसलिए तुम्हें अपने नाग सैनिकों से बंदी बना लेता हूँ मैं।
खलनायक!... हाँ, खलनायक हो गया है नागराज....

छनाक
हड्डियों को सर्द कर देने वाला ठहाका लगाकर ...
... नागराज उस काम में जुट
जो उसके नाम से कराई मे
खाता था –
... नागराज के हाथों--
खाली होने लगे थे कीमती हीरों के शोकेस...
कुछ पलों बाद ही–
अच्छा दोस्तो, गुडबाय फिर मिलेंगे!
WELCOM
लाखों-करोड़ों रुपयों के हीरे लेकर यह जा और वह जा नागराज–

लेकिन नागराज छत्र की ओट लेकर ना केवल गोलियों से बचा...
...बल्कि...
...ले उड़ा--
उफ! हमारी गोलियों की पहुंच से बहुत दूर पहुंच चुका है वह!
...छत्र को उखाड़ कर...
बम्बई! चौपाटी--
सैलानियों की मौज-मस्ती के एक आदर्श स्थान--
मौज-मस्ती में डूबे सैलानी उस समय रोमांचित हो उठे जब उन्हें नजर आया नागराज--
वह! नागराज भी बीच पर।
नहाना छोड़ो फ्रेण्ड्स! आओ, आटोग्राफ लें नागराज के!

...के आटोग्राफ लेने के लिये वहां सैलानियों का रेले का रेला—

...आटोग्राफ, की जगह नागराज ने उन्हें दिये—

...मम्मी रे!

दहशत तो फैलनी ही थी! हड़कम्प तो मचना ही था।

भागो, वरना सांप काट खायेंगे हमें।

भागो!

गिड़गिड़ा उठा एक बच्चा—

प्लीज नागराज अंकल! मेरे पास नागों को मत लाइये। मुझे बहुत डर लगता है।... प्लीज...
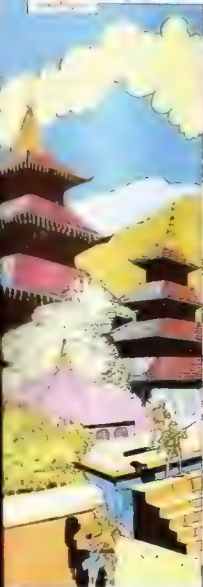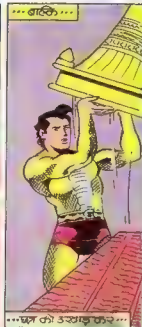
नागों से डर लगता है तुम्हें।... कोई बात नहीं। अभी तुम्हारा डर दूर किये देते हैं हम...

ये ले!
दहशत से अपने होश गंवा बैठा वह मासूम—
दीपू!
नागराज, कुत्ते की मौत मरेगा तू, कीड़े पड़ेंगे नागराज, तुझे... कीड़े!
वहशियों-जैसे हलक फाड़कर हंसा नागराज—
हा-हा हा, कोसो... और बददुआएं दो... क्योंकि, यही चाहता हूं मैं... यही चाहता हूं मैं। हा-हा-ह
जल्दी ही—
य-ये सब क्या है इंस्पेक्टर, क्यों... क्यों
रहा है मुझे?

चलो!
कुछ पलों बाद ही बम्बई पुलिस हेडक्वार्टर में...
क्या चक्कर है?
फिल्मे देखकर

अब तो ज्वालामुखी-सा भड़क उठा कमिश्नर आफ पुलिस का गुस्सा –

ये तुम ही हो नागराज! और ये तुम, तुम इसलिए हो, क्योंकि दुनिया में सिर्फ एक ही नागराज है ...

... दुनिया में सिर्फ एक ही शख्स है जिसके पास सर्प सैनिकों जैसे अद्‌भुत हथियार हैं।

डोन्ट से एनीथिंग!

लेकिन

ऐसा ही हुआ है। एकदम ऐसा ही हुआ है मैंने पहले भी सचेत किया था आपको। मैंने आपको पहले भी बताया था मनुष्यों की प्रवृत्ति के बारे में। लेकिन आप यह सब कुछ इसलिए मानने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि आपकी आंखों पर नागराज के मोह का पर्दा पड़ा हुआ है...

...खलनायक नागराज!

...साकिम आप मेरी बात पर विश्वास मत कीजिये अपनी दिव्यदृष्टि से स्वयं देख लीजिये हमारे पर किये गये नागराज के जुल्म को!

दिव्यदृष्टि का उपयोग किया कालदूत

अपने स्वार्थ के लिये नागराज ऐसी घिनौनी हरकत करेगा, ये हम सपने में भी नहीं सोच सकते थे...

देखना होगा हमें कि इस समय कहां है नागराज?

दिव्यदृष्टि की मदद से नागराज देखकर उछल ही तो पड़े महात्मा कालदूत –

नागराज जेल में!... लेकिन क्यों?

उफ!
उफ!

BANK
उफ!

महात्मा कालदूत की आंखों में नजर आने लगा
अपनी शक्तियों के मद में चूर होकर नागराज नायक से खलनायक बनता जा रहा है, स्वार्थी और लालची हो गया है नागराज... और इस काम में इसका साथ दे रहा है नागबाबा...
उन दोनों की स्वार्थ की राह आगे एक दिन पूरी मानवता को ले डूबेगी!... नागदंत * की तरह ही प्रलयंकारी साबित होगा

...और ऐसा हो उससे पहले ही रोकना होगा उन्हें... इनके लालच और स्वार्थ के साथ ही खत्म करना होगा उन्हें।

* नागदंत एक विलेन
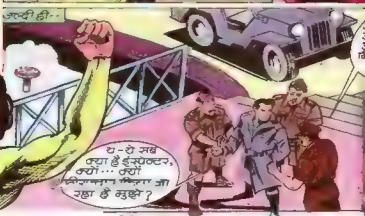
अगले पल अंगारे उगलती कालदूत की आंखों से विचित्र सितारों की बारिश-सी होने लगी...
ओ... जो दो आकृतियों का निर्माण करती चली गई--
हीरे की मानिन्द
उठीं विलक्षण की
मेरी हर योजना सफल गई नागराज! तू ज्यादा समय जिन्दा नहीं सकता।...
...और जब तक मौत तुम्हें बांहों में नहीं लेगी, मैं चैन नहीं बैठूंगा
क्या रहस्य था की बातों का -
इधर जेल में बन्द नागराज --
किसी ने मेरा रूप धर के और अपने हाथों से नाग छोड़कर मुझे बदनाम करने की साजिश रची है, और उसमें वह पूरी तरह सफल भी हो जायेगा अगर मैं यूं ही जेल में बन्द रहा...
कठोरता से भरता चला गया नागराज का चेहरा--
मुझे उसकी साजिश को विफल करना होगा।

र उठा नागराज–

बाहर आओ सौडांगी!

नागराज के शरीर से निकली सौडांगी रेंग गई सलाखों से बाहर की तरफ––

और––

आज़ाद था नागराज–

धन्यवाद सौडांगी! ब तुम वापस मेरे जिस्म में समा सकती हो!

सौडांगी समा गई नागराज के जिस्म में–

र जैसे ही वहां से चलने को हुआ नागराज–

सौरी दोस्तो! मेरे पास रुकने का टाइम नहीं है!

हल्की-सी विष फुंफकार बहुत होगी इन्हें बेहोश करने के लिए!

जेल के सुरक्षाकर्मियों को अपने सर्पसैनिकों से बेबस करता बाहर निकला नागराज...
...अचानक चौंक पड़ा—
अरे! ये सितारों की बारिश-सी कैसी हो रही है?
बरसते हुए वे रंगीन सितारे लेने लगे एक मानवाकृति...
...जो अब पूर्ण
थरथराकर रह
नागराज—
कुछ पलों
लिये हैरानी के
ब्रेक क्रॉस कर
उसके चेहरे पर
मरने के
तैयार हो जा
नागराज! तेरी
के दीये को बुझ
आया है विषैर
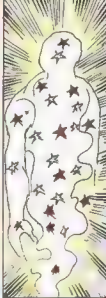
... जवाब दिया विषरखा ने अपने प्रचण्ड वार से—
अपने मृत्यु देवता के पास पहुँचकर अपने गुरु गोरखनाथ के साथ जवाब मांगना अपने हर सवाल का।
आह! महात्मा गोरखनाथ से क्या सम्बंध है इसका?... उनका नाम क्यों ले रहा है यह?
... और जैसे हवा पर सवार होकर विषरखा तक पहुँचा
मेरे हर सवाल का जवाब तुझे ही देना होगा।
अचानक आश्चर्य से फटती चली गईं नागराज की आँखें—
उफ़... नहीं!

सामने का दृश्य ही ऐसा था –
अपने स्वार्थ के लिए तुम धीरे-धीरे विश्व के लिए खतरा बनते जा रहे हो नागराज...
...खत्म होना जरूरी

नागराज को
दृटी का पुतला
समझकर कितनी
भूल की है तुमने।
तुम्हें अभी पता
चल जायेगा।

अपना वार करने के साथ ही भौचक्का रह गया नागराज--

ओह,
मेरा हाथ तो
इसके आर-पार
निकल गया।
उफ!

अब
मौत के
शिकंजे में
फंस गया है
तू
नागराज...

नहीं बचेगा,
अब तू नहीं
बचेगा।

नागराज की गर्दन पर सख्ती से
जम गये विषरखा के हाथ--

बिन मछली की भांति छटपटाने लगा
था नागराज--

एक भी सांस
नहीं ले पायेगा
नागराज।
हा-हा-हा

आहह! इसकी
फौलादी पकड़ से घुट
रहा हूं मैं।...
धीरे-धीरे दम घुट
रहा है मेरा।
आ ह ह!

WATER

ठीक मौत के दरवाजे
पर पहुँच गया था
नागराज।

...तब नागराज के शरीर से निकली सौडांगी–
पीछे हट नीच!
इस अप्रत्याशित वार से लड़खड़ा गया विषरखा––
लेकिन सिर्फ एक पल के लिये––
क्योंकि अगले पल उसने सौडांगी को "रॉकेट" बना दिया––
नागराज के सर्पसैनिक–
...भी कुछ ना बिगाड़ सके विषरखा का–
इन तुच्छ नागों की क्या बिसात जो रोक सके विषरखा को!
उफ़! क्या किया जाये इससे निपटने के लिए?
राजधानी एक्सप्रेस से भी ज्यादा तेज़ दौड़ते नागराज के दिमाग ने आखिर ढूंढ ही ली विषरखा से निपटने की तरकीब–
हाईटेंशन वायर के जंकशन के पास स्थित वाटरटैंक से शायद कुछ बात बन सके।
WATER

ो तू आयेगा
ागराज वहाँ मैं
आऊँगा···

वाटरटैंक की तरफ लहराया
और नागराज तो उसके पीछे
लपका विषरवा भी—

···और ये क्रम
तब तक चलता रहेगा··
जब तक तू मौत की गोद
में नहीं सो जाता।

घातक थीं बहुत वे काली किरणें···

से नागराज तो शानदार
लाबाजियां खाकर बच गया,
ज वाटरटैंक ना बच सका-

और अगले पल ऐसा दृश्य उपस्थित
हुआ वहां जैसे भाखड़ा बांध टूट गया
हो—

भलभला उठे पानी की
चपेट में आने से स्वयं को
ना बचा सका विषरवा—

इधर नागराज ने लपककर
उठा लिया कार की टूटी बॉडी
का वह धारदार टुकड़ा—

जिसे पूरी शक्ति के साथ उछाल देने में एक पल का हजारवां हिस्सा भी नहीं गंवाया नागराज ने-
परिणाम-
कड़ाक
... खम्बे से जुदा होकर पानी में आ गिरे करंट उगलते हाईटेंशन के तार-
इसी के साथ पानी में फैलते चले गये 25 वोल्ट के करन्ट में
उबाल दीं विषरखा के
कंठ से--
और वह चीखें विषरखा की अन्तिम चीखें साबित हुईं-
स्तब्ध खड़े थे नागराज और
कौन था वो विषरखा और कहां से आया था?
नाम लिया

ऑखें बन्द कर लीं नागराज ने
र पुकार उठा--
महात्मा गोरखनाथ प्रकट हों।
लेकिन आज वह हो गया जो पहले कभी नहीं हुआ था--
मेरी पुकार पर महात्मा गोरखनाथ नहीं आये, जरूर किसी मुसीबत में फंस गये हैं।
मेरे शरीर में समा जाओ सौडांगी! मुझे तुरन्त आसाम महात्मा गोरखनाथ के आश्रम में पहुंचना है। लगता है उन पर कोई संकट आन पड़ा है।
त्मा गोरखनाथ--
एक अजीब ही समस्या से दो चार थे जो--
कौन हो तुम?... क्या करने आये हो यहां?
सर्पकेतु!...
तुम्हें अपने साथ ले जाने आया हूं मैं यहां।
कहां ले जाना चाहते हो तुम मुझे?

इसका पता तुम्हें वहीं पहुंचकर चलेगा गोरखनाथ।
उगल दी सर्पकेशा ने वह विष-फुंफकार की आंधी..
लेकिन -
इस तूफान के आगे तिनके की तरह उड़ जायेगी तेरी विष-फुंफकार की आंधी।
गरजे गोरखनाथ—
शिकांगी! हमला!
गजब की तेजी से झपटा सैकड़ों जादुई शक्ति
स्वामी शिकांगी—
उफ!
खींचता चला गया वह वो लक्ष्मण रेखा जो
निकलने की कोशिश करने वाला तुरन्त भस्म हो जाता था—

लेकिन —
बच्चों का खेल है मेरे लिये इस अग्नि रेखा को पार कर लेना ...
... क्योंकि स्वामी ने मुझे बनाते समय शिकांगी की प्रत्येक शक्ति का भरपूर ख्याल रखा है ...
... और इस बात का भी ख्याल रखा है उन्होंने कि शिकांगी से कैसे निपटा जा सकता है।
शिकांगी की सम्पूर्ण शक्तियां धरी की धरी रह गईं उस अद्भुत पिंजरे के सामने
बेबस-सा कैद होकर रह गया वह उसमें —
तब सोचा ये गोरखनाथ —
कौन है भला स्वामी जो शिकांगी तक को कैद करने की क्षमता रखता है?
अब --
अब तुम्हें भी कैद करके मैं ले चलूंगा स्वामी के पास।
गोरखनाथ को कैद करने को उनकी तरफ बढ़ा वह अद्भुत पिंजरा ...
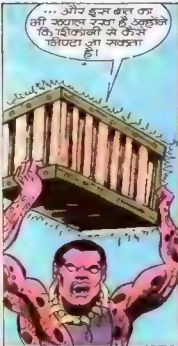
लेकिन पिंजरे के गोरखनाथ तक पहुंचने से पहले वहां पहुंचा नागराज —
मेरे होते आप पर कोई आंच नहीं आ सकती महात्मन!
गोरखनाथ को सुरक्षित स्थान पर छोड़कर नागराज ने ली सर्पकंठा की खबर —
महात्मा गोरखनाथ को कैद करने की सोचने वाले तेरे शरीर में कैद तेरी आत्मा को आजाद कर दूंगा मैं!
महात्मा गोरखनाथ भी पीछे नहीं रहे वार करने में —
दुष्ट! ज्यादा समय तक नहीं झेल पायेगा तू इन दो तरफा वारों को!
स्थिति की गम्भीरता को समझ चुका था सर्पकंठा
इन दोनों से जीतना मुश्किल हो जायेगा... मुझे स्वामी की विशेष शक्तियों का इस्तेमाल करना होगा
दूसरे क्षण उन्हीं सर्पकंठा का हाथ तो प्रकट हो गया उसमें एक विचित्र हथियार —

जिसे पूरी शक्ति के
थ सर्पकंठा ने जमीन
र दे मारा–
उफ! मेरे चारों तरफ की धरती लावा उगलने लगी। उफ!
धड़ाम
धड़ाम
उफ! ये क्या हो रहा है?
भौंचक्के रह गये ये महात्मा गोरखनाथ--

लेकिन भौचक्केपन का भरपूर फायदा उठाया सर्पकंठा ने—

ओपफ!

सर्पकंठा के हाथ से निकल वह विचित्र कांटों का ताज जा लिपटा महात्मा गोरखनाथ के मस्तिष्क से—

महात्मा गोरखनाथ के मुख से एक दर्दनाक चीख

उआऽऽहे

धर नागमणि द्वीप पर कालदूत की गुफा गूंज रही थी गोरखनाथ की अचरज भरी आवाज से--
महात्मा कालदूत आप!... आप हैं सर्पकंठा के स्वामी!... आपने सर्पकंठा के हाथों अपहरण कराया है हमारा!
हां गोरखनाथ, हां! और जानते हो मैंने ऐसा क्यों किया... क्योंकि मैं तुम्हें तुम्हारे अपराधों की सजा अपने हाथ से देना चाहता था!
किस अपराध की बात कर रहे हैं आप?
कालदूत ने गोरखनाथ को बताया उनका अपराध तो—
आपको गलतफहमी हुई है महात्मा! नागराज के नाम पर देश-विदेशों में जो अपराध हुये वह नागराज के किसी दुश्मन का षड्‌यंत्र है, क्योंकि जिन दिनों वे अपराध हुये नागराज विलक्षण जाति के नागों को अपने वश में करने में लगा हुआ था...
सरा विलक्षण जाति के नागों को नागराज की नाग सेना में ामिल करने की सोचकर हमने ोई अपराध नहीं किया है, ल्कि उस सम्पूर्ण जाति को बचाने ी कोशिश की है जो नशीले पदार्थों ा सेवन करके अपने-आपको बाह-बरबाद करने पर तुली है...
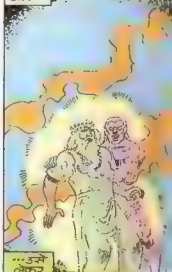
...तभी मेरे कहने पर नागराज ने उनके खेतों और घरों में आग लगाई थी, ताकि वे भूख और रहने की समस्या से परेशान होकर नागराज की शर्तें मानने पर मजबूर हो जायें।
क्रोध से दहाड़ उठे महात्मा कालदूत—
पृथ्वी पर हर प्राणी को स्वतन्त्र रूप से रहने का अधिकार है और तुम इस बात को अच्छी तरह जानते हो, लेकिन फिर भी...
...फिर भी तुमने अपने स्वार्थ के लिये विलक्षण जाति के नागों को तंग किया। नागराज ने अपने स्वार्थ के लिए देश-विदेशों में डाके डाले, इसलिए हमने तुम दोनों को समाप्त करने का निर्णय किया है...
...तुम यहां आ ही पहुंचे हो, नागराज को भी विषरखा खत्म करके आना ही होगा!
तभी वहां प्रवेश किया सर्पकंठा ने—
विषरखा को नागराज ने समाप्त कर दिया है स्वामी, अभी जीवित है वह, इस बात का सबूत मुझसे हुई उसकी मुठभेड़ है।
महात्मा कालदूत को अपने और नागराज के टकराव की सारी दास्तान सुना दी सर्पकंठा ने—
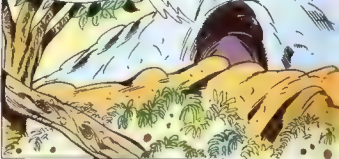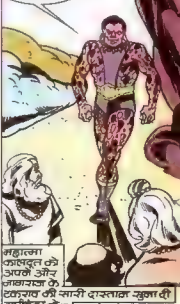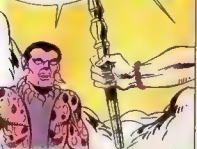
...और अन्त में बोला...
आप आज्ञा दें तो नागराज को मैं बन्दी बनाकर लाऊं स्वामी!
हां, सर्पकंठा! जाओ! ...जाओ!
महात्मा गोरखनाथ सर्पकंठा को रोकने आगे बढ़े तो...
नहीं!
...उनके शरीर से बेल की भांति लिपटती चली गई कालसर्पी—
हा-हा-हा!
नागराज—
इस समय नजर आ रहा था फन पार्क में—
FUN PARK
जहां सैकड़ों मासूम बच्चे आनन्द से झूम रहे थे—
आज इनके आनन्द में ऐसा खलल डालेगा जिसे ये जिन्दगी भर नहीं भूल पायेंगे!
खलबली मच गई बच्चों की हंसती-खेलती दुनिया में—
सांप
सांपों के पहुंचने का एक ही मतलब है कि खलनायक नागराज आ गया है...

हा-हा-हा। बड़ा सुकून मिलता है ये देखकर दिल को कि आतंक का दूसरा नाम बन गया है नागराज का नाम...
...ओह!
...लेकिन अभी ये आतंक रुकेगा नहीं, बल्कि दिन-दूनी और रात चौगुनी तरक्की करेगा। हा-हा-हा।
बच्चों की तरफ बढ़े ये नाग...
रास्ते में ही दूसरे नागों से गुत्थम-गुत्था होकर रह गये—
अचरज डेरा जमाता चला गया मासूम बच्चों की नन्ही आंखों में--
नागराज!... एक और नागराज।
दो-दो नागराज!
कौन है... असली कौन है नकली?

देखते रहो बच्चो अभी हो जाता है इस बात का...
धड़ाम
...फैसला!
इस लड़ाई का फैसला तुम्हारी मौत ही होगी नागराज!
इस बार वार करने के साथ ही नागराज ने नोच लिया दूसरे नागराज का चेहरा—
और इसी के साथ हो गया असली-नकली का फैसला—
वि... विलक्षण तुम!
हां, मैं... दुनिया की नजरों में तुम्हें असली खलनायक बनाने के लिए मैंने ही तुम्हारा रूप धरा, और मैंने ही किये वे अपराध जो तुम कभी नहीं कर सकते थे!

...खैर मैं अपने इस उद्देश्य में तो सफल नहीं हुआ, लेकिन तुम्हें खत्म करने में जरूर सफल होऊंगा!

हिस्स

अपने मुख से जो उगली विलक्षण ने विषभरी आग...

...तो नागराज ने रोका उसे एक अनोखे तरीके से —

उफ!

हिस्स

तुम जैसे नशेड़ी मेरे सामने ज्यादा देर तक नहीं टिक सकते विलक्षण!

सटाक

जमीन सूंघने को मजबूर कर दिया विलक्षण को नागराज के प्रचण्ड वारों ने —

धड़ाक

आ गिरा वह —

तब नागराज ने बच्चों के सामने पेश की अपनी सफाई —

अच्छी तरह देख लो बच्चो! यह है वह कमीना जिसने नायक होते हुये मुझे खलनायक बनाकर रख दिया था...

कारी मारने अपने असली नायक से आ लिपटे
ी बच्चे–
टेन,टेन टड़ेन
हमने तुम्हें खलनायक समझकर बहुत बड़ी भूल की है। नागराज! हमें माफ कर दो।
पलभर में ही दूर हो गये सभी गिले-शिकवे--
अब तुम खेलो-कूदो बच्चो! मैं इसे पुलिस हेडक्वार्टर लेकर पहुंचता हूं ताकि सारी दुनिया इसकी असलियत जान सके।
अब तुम कहीं नहीं जा सकते नागराज...
यहीं ले गया था महात्मा गोरखनाथ को और अब ये मुझे लेने आया है... सारा रहस्य जानने का एक सुनहरी मौका मिला है मुझे, इसे अपने हाथ से नहीं जाने दूंगा।
नागराज ने आसानी से पूरी हो जाने दी सर्पकेता की इच्छा–
क्योंकि तुम्हें साथ चलना है।

नागराज को लेक
गायब होता चप
गया सर्पकिला –

होश में आ चुके विलक्षण ने भी देखा वह नजारा – –
नागराज को लेकर गायब हो गया सर्पकिला। कहाँ पहुँचेगा उसे लेकर, ये अच्छी तरह जानता हूं मैं। इसलिए मैं भी वहां पहुंचकर अपनी आंखों से देखूंगा नागराज की मौत का नजारा।

कालदूत की गुफा के कोने-कोने में गूंज रही थीं नागराज और गोरखनाथ के कंठ से निकलने वाली दर्दनाक चीखें – – और साथ ही गूंज रहा था महात्मा कालदूत के मुख से निकलने वाला ठहाका –
रोक लीजिये महात्मा कालदूत! रोक लीजिये अपनी शक्तियों को। मत खेलिए हमारे साथ दरिन्दगी भरा यह खेल। आ ह ह!
हा-हा-हा, अब तो यह खेल तुम दोनों के विनाश के साथ ही खत्म होगा . . .
हा-हॅं!
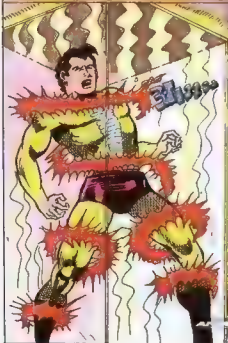
चट्टान की भांति कठोर हो गया
विरोध से लबालब भरा स्वर उनके मुख से—
नहीं रहे हैं। वहशीपन पर आये हैं। हो गये हैं ... वहशी।
हां, वहशीपन ही है ये और ये देख इसका एक और नमूना।
के हाथ में थमे नागदण्ड ने उगल दिये मौत के ये छल्ले—
पहुंच नहीं पाए नागराज तक—
मेरे जीते-जी नागराज के शरीर पर खरोंच भी नहीं डाल सकते आप महात्मा...
अपने बंधनों को तिनके की भांति तोड़ दिया गोरखनाथ ने—
ओह तो अपनी शक्तियों का प्रयोग करने का इरादा है अब तेरा।
हां, महात्मा! आपके सामने मैं यह अपराध करना तो नहीं चाहता था, परन्तु अब इसके सिवा कोई चारा भी नहीं है।
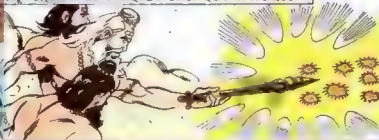
अपनी शक्ति के बल पर नागराज को भी आज़ाद किया महात्मा गोरखनाथ ने–

कालदूत की आंखों में कहर और आवाज में जहर भरता चला गया–

आज़ाद तो हो गये हो तुम, लेकिन मृत्यु से नहीं बच पाओगे..

...बल्कि और भी ज़्यादा घिनौनी मौत मरोगे तुम सर्पकंठा के हाथों।

अपनी शक्तियों के साथ आगे बढ़ा सर्पकंठा–

स्वयं को बचाकर सर्परस्सी पर लहराया नागराज

हटिये महात्मा और इसका ध्यान बटाने की कोशिश कीजिये।

अचानक विलक्षण के खुशी के क्षण आश्चर्य के पलों में बदलते चले गये—

अरे!

जाल से बुरी तरह जकड़कर रह गये विलक्षण को दिखाई दी—

विसर्पी!

हाँ, मैं दुष्ट!... तुम्हारी सारी हकीकत जान चुकी हूँ मैं। अब महात्मा कालदूत के पास ले जाऊँगी मैं तुम्हें। सारी बात जानकर नागराज को नहीं, तुम्हें एक भयानक मौत देंगे।

जहरीली मुस्कान खेलती चली गई विलक्षण के होंठों पर विसर्पी की बात सुनकर —
इस भ्रम में मत रह विसर्पी! मुझे मौत देने की सोच भी नहीं सकते महात्मा कालदूत! मुझमें और नागराज में से अगर वे किसी को मौत देने के लिए चुनेंगे तो वो निःसंदेह नागराज होगा।
क्यों?... ऐसी क्या विशेषता है तुममें?
विलक्षण ने अपनी जो विशेषता बताई उसे सुनकर सन्न रह गई विसर्पी
उफ़! नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।
ऐसा ही है विसर्पी! मुझे अन्दर ले चलो, तुम्हें स्वयं पता चल जाएगा।
अन्दर-
सर्पकंठा की शक्तियों से तुम ज्यादा देर स्वयं को बचाकर नहीं रख सकते गोरखनाथ...
...तुम्हें लाश बनकर धरा पर गिरना ही होगा।
महात्मा से उलझने के चक्कर में उसका ध्यान कुछ पलों के लिए मुझसे हट गया है, यही मौका है कुछ कर गुजरने का।
अपनी सर्परस्सी का इस्तेमाल किया नागराज ने—
चीखता हुआ धड़ाम से नीचे आ गिरा सर्पकंठा—
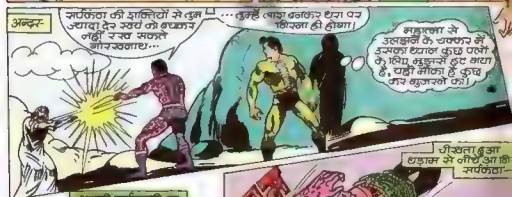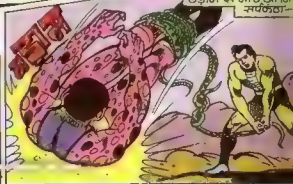
का तूफान उगलता हुआ आया नागराज —
अब इसे सम्भलने का कोई भी मौका देना बेवकूफी होगी।
अपने हलक से बिजलियों का बवण्डर तब तक उगलता रहा नागराज जब तक —
…लाश में बदलकर नीचे न आ गिरा सर्पिता —
पड़ा कालदूत क्रोध का ज्वालामुखी —
हे ईश्वर! ये क्या दिन दिखा रहा है। महात्मा कालदूत से एक बार फिर टकराव। उफ!
बस बहुत हुआ चूहे-बिल्ली का खेल। अब सबको खत्म करूंगा मैं तुम दोनों को।
अपनी समस्त शक्तियों के साथ हमला बोल दिया कालदूत ने —
तेरा अन्त अवश्य होगा नागराज!
अपने-आपको बचाने के लिए मुझे टकराना ही होगा महात्मा कालदूत से।

गजब की फुर्ती का प्रदर्शन करते हुये नागराज ने कालदूत के हाथों से छीन लिया वह प्रलयंकारी त्रिशूल —
लेकिन अगले ही पल —
तुम भूल गये हो नागराज! मेरे ये अस्त्र जब मैं चाहूं मेरे पास लौट आते हैं।
ओह!
क्रोध से उबलते कालदूत ने उछाल दिया नागराज की तरफ अपना त्रिशूल —
... लेकिन —
जब तक मेरे दम में दम है नागराज का बाल भी बांका नहीं कर सकते आप।
इस बार कालदूत के द्वारा उछाली गई कालसर्पी ने धारण कर लिया वह आश्चर्यजनक रूप —
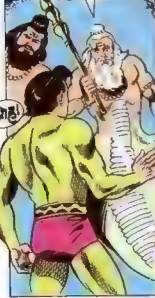
...जो पहले गोरखनाथ और फिर...
नागराज को जकड़ती चली गई –
हा-हा-हा! कालसर्प अब तुम्हें तिलभर भी नहीं हिलने देगा...

... और यह नागदण्ड नहीं देगा तुम्हें पलभर भी तड़पने का मौका। हा-हा-हा!
उफ! अब मृत्यु निश्चित है! नागदण्ड का वार कुछ नहीं देता मौत के सिवा।
उफ!
कालदूत के रूप में पाश आगे चला जा रहा था गोरखनाथ और नागराज का काल—
आज खत्म हो जाती थी उनकी लीला कि तभी—
रुक जाइये महात्मा!...
उस पाप की
और महात्मा गोरखनाथ को मत दीजिये...
विसर्पी!
...जिसे इस दुष्ट ने किया है।
विलक्षण
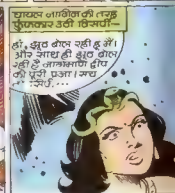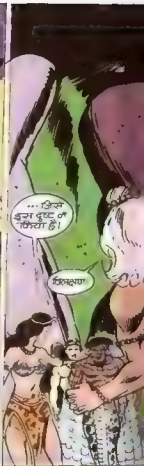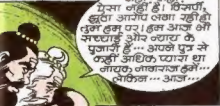
...यह शैतान बोल रहा है। जो तुम्हारा अपना खून है। ... तुम्हारा अपना पुत्र है जो।
जबरदस्त रहस्योद्घाटन था ये गोरखनाथ व नागराज के लिये-
विलक्षण, महात्मा कालदूत का पुत्र!
नहीं!
हाँ, नागराज हाँ. विलक्षण महात्मा कालदूत का पुत्र ही है। तभी तो सच्चाई पर धूल डालकर तुम्हें सजा देने पर तुले हुये हैं ये। ...तभी तो भूल गये हैं महात्मा कि इन्होंने विश्व के समस्त प्राणियों को पाप और पापी से बचाने का व्रत लिया हुआ है।
तड़प उठे महात्मा-
नहीं! नहीं! ऐसा नहीं है। विसर्पी, झूठा आरोप लगा रही हो तुम हम पर। हम आज भी सच्चाई और न्याय के पुजारी हैं... अपने पुत्र से कहीं अधिक प्यारा था नायक नागराज हमें... लेकिन... आज...
...आज नायक नहीं रहा नागराज, खलनायक बन गया है वह।
नहीं महात्मा! नागराज आज भी नायक है, लेकिन उसे खलनायक बनाने का प्रयत्न किया है विलक्षण ने... आपके पुत्र ने।

बिफरते हुये विलक्षण की तरफ पलटे महात्मा कालदूत—

अभी पता चला जाता है सारी सच्चाई का।

कालदूत के तीव्र सम्मोहन में फंसकर सारी सच्चाई बयान करता चला गया विलक्षण—

—हां, मैंने ही बनाया है नायक नागराज को खलनायक नागराज।

अंगारे बरसने लगे कालदूत की आंखों से सब कुछ सुनकर—

उफ! तेरे फैलाये जाल में फंसकर एक महा अनर्थ करने जा रहे थे हम…

…तुझे जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं पापी।

फुर्ती से घोंप दिया पूरा नागदण्ड कालदूत ने विलक्षण की छाती में…

…बहा डाला वह खून जो उसका अपना खून था—

गुफा में छाए मरघट-से सन्नाटे को तोड़ा महात्मा कालदूत की भर्राई हुई आवाज ने —
काश! तुमने वर्षों पहले हमारी बात मान ली होती तो तुम अन्याय और पाप के रास्ते पर न चले होते और आज तुम मृत्यु के नहीं, हमारे गले से लगे होते...
फिर नागराज और गोरखनाथ को आजाद किया महात्मा कालदूत ने—
और —
मैं तुम दोनों का अपराधी हूं। तुम जो चाहे दण्ड दे सकते हो मुझे। वचन देता हूं तुम्हारे हर दण्ड को हंस-हंस कर सहूंगा मैं।
बोल पड़ा नागराज —
ऐसा कहकर हमें शर्मिंदा मत कीजिये महात्मन... आपकी गलत फहमी दूर हो गई, हमारे लिये यही बहुत है।
नागराज ठीक कह रहा है महात्मा!
आगे बढ़कर नागराज को अपने सीने से लगा लिया महात्मा कालदूत ने—
तुम धन्य हो नागराज! अब हम समझ गये हैं कि तुम विलक्षणा को सुधारने के लिए ही कुछ पलों के लिए खलनायक बने... तुम्हें उसका फल मिलेगा! विलक्षणा नहीं रहा, लेकिन उसके सभी साथी तुम्हारी सर्पसेना में अवश्य शामिल होंगे...
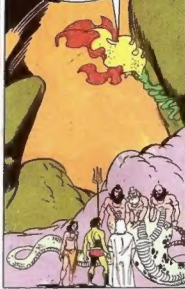
... अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो उन्हें मेरे कोप का भाजन बनना पड़ेगा।
विलक्षण के साथी इच्छाधारी नागों में इतना साहस कहां था कि वे महात्मा कालदूत के क्रोध के कहर का सामना कर पाते, फलस्वरूप...
...नागराज की सर्पसेना में शामिल हो गये वे सभी—
और नागराज कहलाया...
... विजेता नागराज
समाप्त